https://archive.org/details/bk1273/page/n0/mode/1up

2012-08-26 -Puri Shankaracharya Certificate (1273)

All Items on https://archive.org/details/realpatidar

Full Library on https://realpatidar.com/library

श्रीहरि:

श्रीगणेशाय नम:

पूर्वाम्नाय श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरीपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती
श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरी- ७५२००१, ओड़िशा, दूरभाष/फेक्स:- ०६७५२-२३१०९४
निज सचिव - स्वामीश्रीनिर्विकल्पानन्दसरस्वती, मो-९४३७०३१७१६,९४३७००४७९५
Tele-Fax 06752 - 231094, Ph.- 231716, Mobile No :- 9437031716, 9437004795
e-mail-contact@govardhanpeeth.org, website-www.govardhanpeeth.org

क्रमाङ्क :-३६२/२७८/गो.म./१२

।। श्रीहरि: ।।

श्रीगणेशाय नम:

पूर्वाम्नाय-श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-पुरीपीठाधीश्वर स्वामी निश्चलानन्दसरस्वतीजी महाराजका 'सत्पन्थ' से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण सन्देश

विदित हो कि १४वीं सदीमें ईरान-निवासी शिया-इस्लामिक प्रचारक 'पीर सदरुद्दीन' के द्वारा संस्थापित 'सत्पन्थ' (सतपंथ) और इमाम शाह बावा के द्वारा संस्थापित ' पीराणा सतपंथ' , गुजराती लेक्सीकोन, भगवद् गोमण्डल, जोड़नीकोष और सत्यप्रकाश - पीराणा सतपंथका इतिहास पुस्तकोंके अनुसार मुसलिमधर्म हैं । http:// www.ismaili.net, http:// www.iis.ac.uk के अनुसार इनमेंसे एक संस्थानके धर्मगुरु आगाखान इस्लाम उद्घोषित हैं । सरकारी दस्तावेज गेजेटियर ऑफ बाम्बे १८८०, बाम्बे गेजेटियर १८९९, गुजरात राज्य गेजेटियर - अहमदाबाद जिल्ला १९८४ तथा गेजेटियर ऑफ इण्डिया - गुजरात राज्य १९८९ के अध्ययनसे इनके घातक छद्मरूपकी विशेष जानकारी प्राप्त की जा सकती है ।

वस्तुस्थिति यह है कि इस्लामके मौलिक सूत्रात्मक अंशको इस संस्थानके आचार और विचारमें सम्मिलितकर हिन्दु-आदि अन् इस्लामिक-संस्कृतिको विकृतकर उन्हें अल्पसङ्ख्यक बनानेका यह विषाक्त मनोवैज्ञानिक कुचक्र है । घातक छद्मके चपेटमें आकर भारतके गुजरात आदि क्षेत्रोंमें लाखों हिन्दू धर्मच्युत हो चुके हैं और होने जा रहे हैं ।

लोभ, भय, कोरी भावुकता और अविवेकके वशीभूत हिन्दुओंके ख्यातिप्राप्त कतिपय सांस्कृतिक, सामाजिक तथा प्रशासनिक महानुभावोंको भी इस संस्थानने अपना पक्षधर बनाकर इस संगठनसे पलायनकी भावनावाले व्यक्तियोंको भ्रमित तथा अवरुद्ध कर दिया है ।

मानवाधिकारकी सीमामें इस विदेशी षड्यन्त्रको निरस्त करनेकी आवश्यकता है ।

देशकी अखण्डता, सनातन हिन्दु -संस्कृति की सुरक्षा और वंशपरम्पराकी विशुद्धिकी भावनासे इस पन्थके चपेटसे स्वयंको यथाशीघ्र मुक्तकर पुन: पूर्वप्राप्त सनातन-हिन्दु-संस्कृतिको स्वीकार करनेकी आवश्यकता है ।

इस्लामजगत्के प्रति अन्-इस्लामिक संस्थानोंकी दुर्भावनाको रोकनेकी भावनासे इस संस्थानके सञ्चालकोंका यह दायित्व है कि उक्त घातक प्रकल्पको वे शुद्ध हृदयसे यथाशीघ्र स्वयं निरस्त कर मानवोचित शीलका परिचय दें।

निर्विकल्पानन्द सरस्वती
स्वामी श्रीनिर्विकल्पानन्दसरस्वती
निजसचिव
पूर्वाम्नाय- श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य
पुरी, ओडिशा (भारत)
(२६.०८.२०१२)

realpatidar.com

Link: http://www.realpatidar.com/library
email: mail@realpatidar.com

https://archive.org/details/bk1273/page/n1/mode/1up

Real Patidar Library

https://www.realpatidar.com/library

This book/literature/article/material may be used for research, teaching, and private study purposes. Any substantial or systematic reproduction, redistribution, reselling, loan, sub-licensing, systematic supply, or distribution in any form to anyone is expressly forbidden.

The library does not give any warranty express or implied or make any representation that the contents will be complete or accurate or up to date. The library shall not be liable for any loss, actions, claims, proceedings, demand, or costs or damages whatsoever or howsoever caused arising directly or indirectly in connection with or arising out of the use of this material.

Full terms and conditions of use: http://www.realpatidar.com

About Real Patidar books

Real Patidar's mission is to organize the information on Satpanth religion, which is a Nizari Ismaili sect of Shia branch of Islam, and to make it universally accessible and useful. Real Patidar Books helps readers discover the material on Satpanth online while helping authors and researchers in their studies. You can know more by visiting http://www.realpatidar.com

You can resize and move this box in any PDF Application like Adobe Acrobat Reader.

No specific pages. See whole book.
References by: RealPatidar.com

https://archive.org/details/bk1273/page/n2/mode/1up

realpatidar.com

卐

श्रीहरि:

श्रीगणेशाय नम:

पूर्वाम्नाय श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरीपीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती
श्रीगोवर्द्धनमठ-पुरी- ७५२००१, ओड़िशा, दूरभाष/फेक्स:- ०६७५२-२३१०९४
निज सचिव - स्वामीश्रीनिर्विकल्पानन्दसरस्वती, मो-९४३७०३१७१६,९४३७००४७९५
Tele-Fax 06752 - 231094, Ph.- 231716, Mobile No :- 9437031716, 9437004795
e-mail-contact@govardhanpeeth.org,website-www.govardhanpeeth.org

क्रमाङ्क :-३६२/२७८/गो.म./१२

।। श्रीहरि: ।।

❁ श्रीगणेशाय नम: ❁

पूर्वाम्नाय-श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-पुरीपीठाधीश्वर स्वामी निश्चलानन्दसरस्वतीजी महाराजका 'सत्पन्थ' से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण सन्देश

विदित हो कि १४वीं सदीमें ईरान-निवासी शिया-इस्लामिक प्रचारक 'पीर सदरुद्दीन' के द्वारा संस्थापित 'सत्पन्थ' (सतपंथ) और इमाम शाह बावा के द्वारा संस्थापित ' पीराणा सतपंथ' , गुजराती लेक्सीकोन, भगवद् गोमण्डल, जोड़नीकोष और सत्यप्रकाश - पीराणा सतपंथका इतिहास पुस्तकोंके अनुसार मुसलिमधर्म हैं । http:// www.ismaili.net, http:// www.iis.ac.uk के अनुसार इनमेंसे एक संस्थानके धर्मगुरु आगाखान इस्लाम उद्घोषित हैं । सरकारी दस्तावेज गेजेटियर ऑफ बाम्बे १८८०, बाम्बे गेजेटियर १८९९, गुजरात राज्य गेजेटियर - अहमदाबाद जिल्ला १९८४ तथा गेजेटियर ऑफ इण्डिया - गुजरात राज्य १९८९ के अध्ययनसे इनके घातक छद्मरूपकी विशेष जानकारी प्राप्त की जा सकती है ।

वस्तुस्थिति यह है कि इस्लामके मौलिक सूत्रात्मक अंशको इस संस्थानके आचार और विचारमें सम्मिलितकर हिन्दु-आदि अन् इस्लामिक-संस्कृतिको विकृतकर उन्हें अल्पसङ्ख्यक बनानेका यह विषाक्त मनोवैज्ञानिक कुचक्र है । घातक छद्मके चपेटमें आकर भारतके गुजरात आदि क्षेत्रोंमें लाखों हिन्दू धर्मच्युत हो चुके हैं और होने जा रहे हैं ।

लोभ, भय, कोरी भावुकता और अविवेकके वशीभूत हिन्दुओंके ख्यातिप्राप्त कतिपय सांस्कृतिक, सामाजिक तथा प्रशासनिक महानुभावोंको भी इस संस्थानने अपना पक्षधर बनाकर इस संगठनसे पलायनकी भावनावाले व्यक्तियोंको भ्रमित तथा अवरुद्ध कर दिया है ।

मानवाधिकारकी सीमामें इस विदेशी षड्यन्त्रको निरस्त करनेकी आवश्यकता है ।

देशकी अखण्डता, सनातन हिन्दु -संस्कृति की सुरक्षा और वंशपरम्पराकी विशुद्धिकी भावनासे इस पन्थके चपेटसे स्वयंको यथाशीघ्र मुक्तकर पुन: पूर्वप्राप्त सनातन-हिन्दु-संस्कृतिको स्वीकार करनेकी आवश्यकता है ।

इस्लामजगत्के प्रति अन्-इस्लामिक संस्थानोंकी दुर्भावनाको रोकनेकी भावनासे इस संस्थानके सञ्चालकोंका यह दायित्व है कि उक्त घातक प्रकल्पको वे शुद्ध हृदयसे यथाशीघ्र स्वयं निरस्त कर मानवोचित शीलका परिचय दें।

निर्विकल्पानन्दसरस्वती
स्वामी श्रीनिर्विकल्पानन्दसरस्वती
निजसचिव
पूर्वाम्नाय- श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य
पुरी, ओडिशा (भारत)
(२६.०८.२०१२)

realpatidar.com